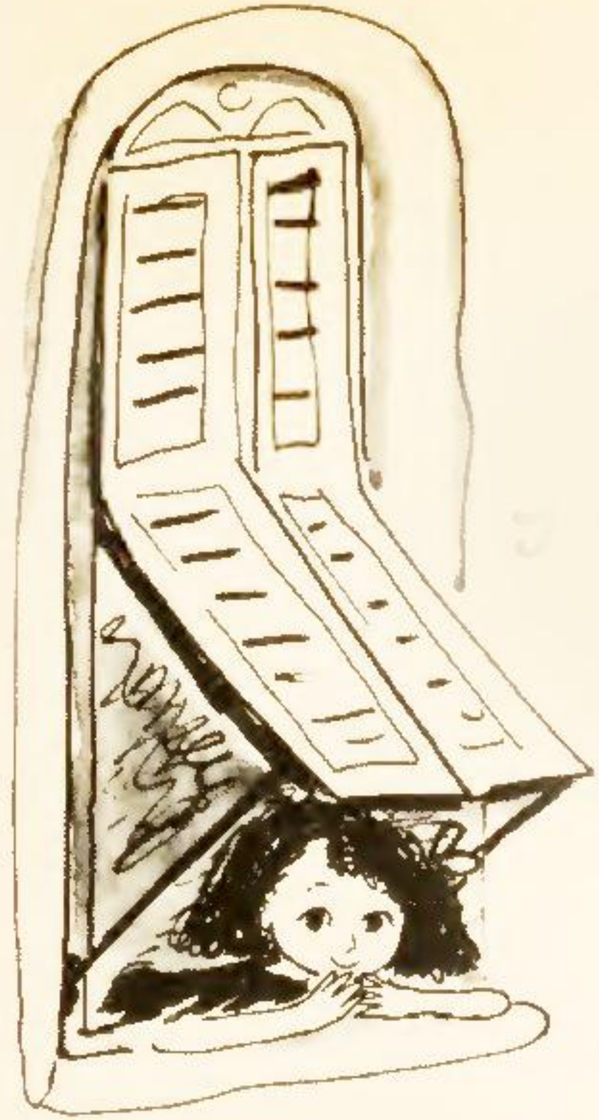
काश! काश!

लेखन व चित्रः लीसल वाइल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



काश! काश!



लेखन व चित्रः लीसल वाइल
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

फ्रैंचेस्का की धर्म-माता के लिए

इटली की नदी आर्बो के किनारे बसा एक शानदार प्राचीन शहर है।

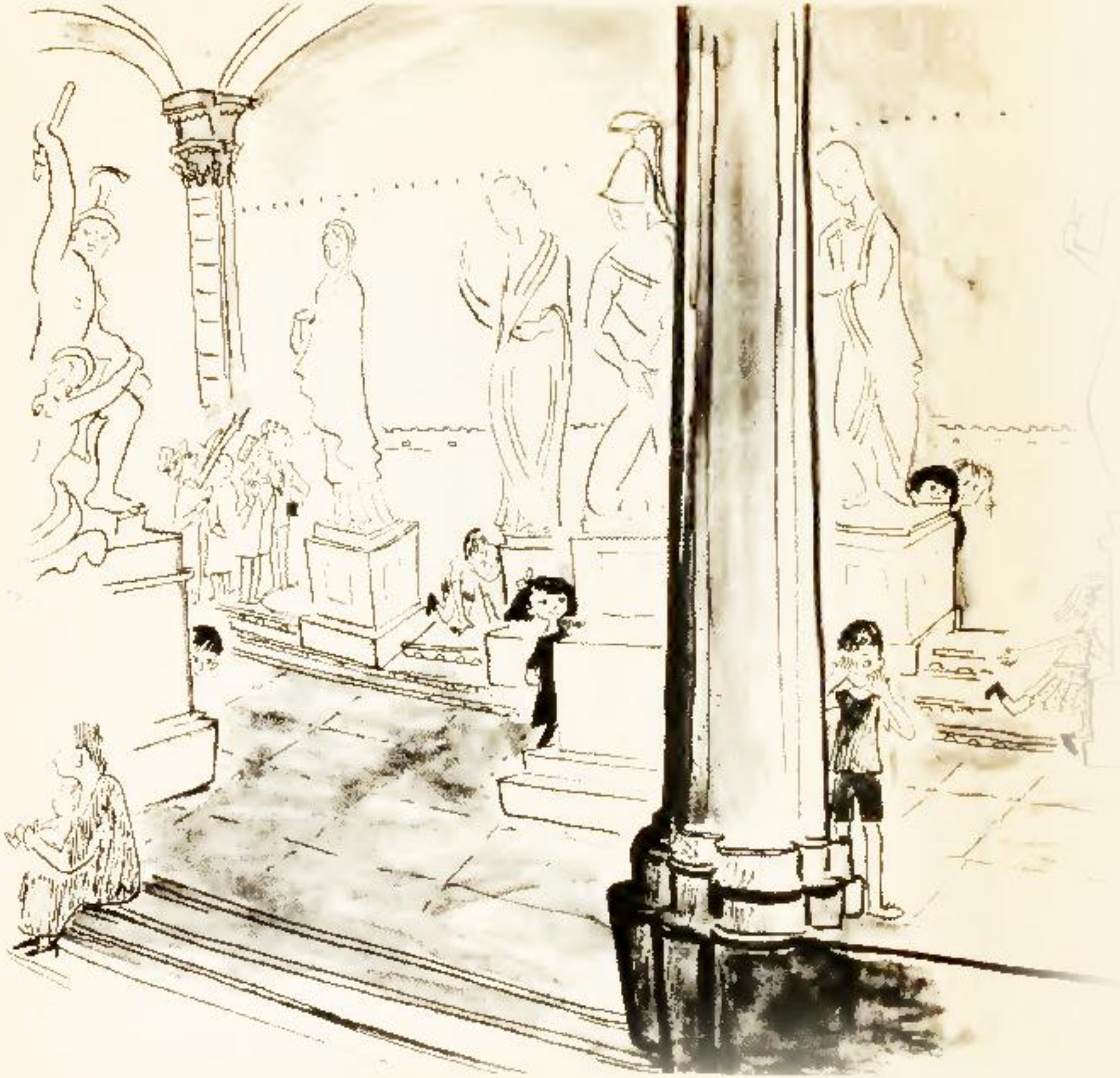
उसमें सुनहरी मीनारें और कई महल हैं। यह शहर परी-देश सा लगता है।

इस खूबसूरत शहर फ्लॉरेंस में नन्ही फ्रांचेस्का रहती है।



फ्रांचेस्का किसी खज़ानों से भरे महल में नहीं रहती।
वह एक तंग गली में
एक तंग मकान में रहती है -
अपनी माँ, पिता और भाई नीनो के साथ।





कभी फ्रांचेस्का और नीनो दूसरे बच्चों
के साथ छिपम-छिपाई खेलते हैं।



तो कभी फ्रांचेस्का अकेले ही
किसी तितली का पीछा करती है।



पर जो करना फ्रांचेस्का को सबसे अच्छा लगता है,
वह है गैलेरिया (कला दीर्घा) पिट्टी में जाना।
वहाँ सुनहरे फ्रेमों में मढ़े खूबसूरत चित्र सजे हैं
- कुछ बड़े तो कुछ छोटे।
वहाँ फ्रांचेस्का एक दिली ख़्वाहिश का सपना देखा करती है।

यह ख़्वाहिश एक राज़ है।
गैलेरिया में दुनिया भर से कई चित्रकार आते हैं
ताकि वे वहाँ सजी उम्दा कृतियों की नकल बना सकें।



एक अमरीकी महिला सबसे छोटे चित्र बना रही थी।

एक बड़े से टोप के नीचे छिपी उस महिला को फ्रांचेस्का देखते थकती नहीं।

वह कभी महिला के बहुत क़रीब नहीं जाती,

इस डर से कि कहीं वह उनके काम में खलल न डाल दे।



पर फ्रांचेस्का खुद से बार-बार फुसफुसा कर कहती

''ओह काश!



मेरे पास भी अपना एक चित्र होता –

छोटा-सा ही, जिसे मैं घर ले जा सकती।'



जब फ्रांचेस्का घर में टोकरियाँ बुनने में अपनी माँ की मदद कर रही होती, तब भी वह अपनी इस ख़्वाहिश पर सोचती रहती।

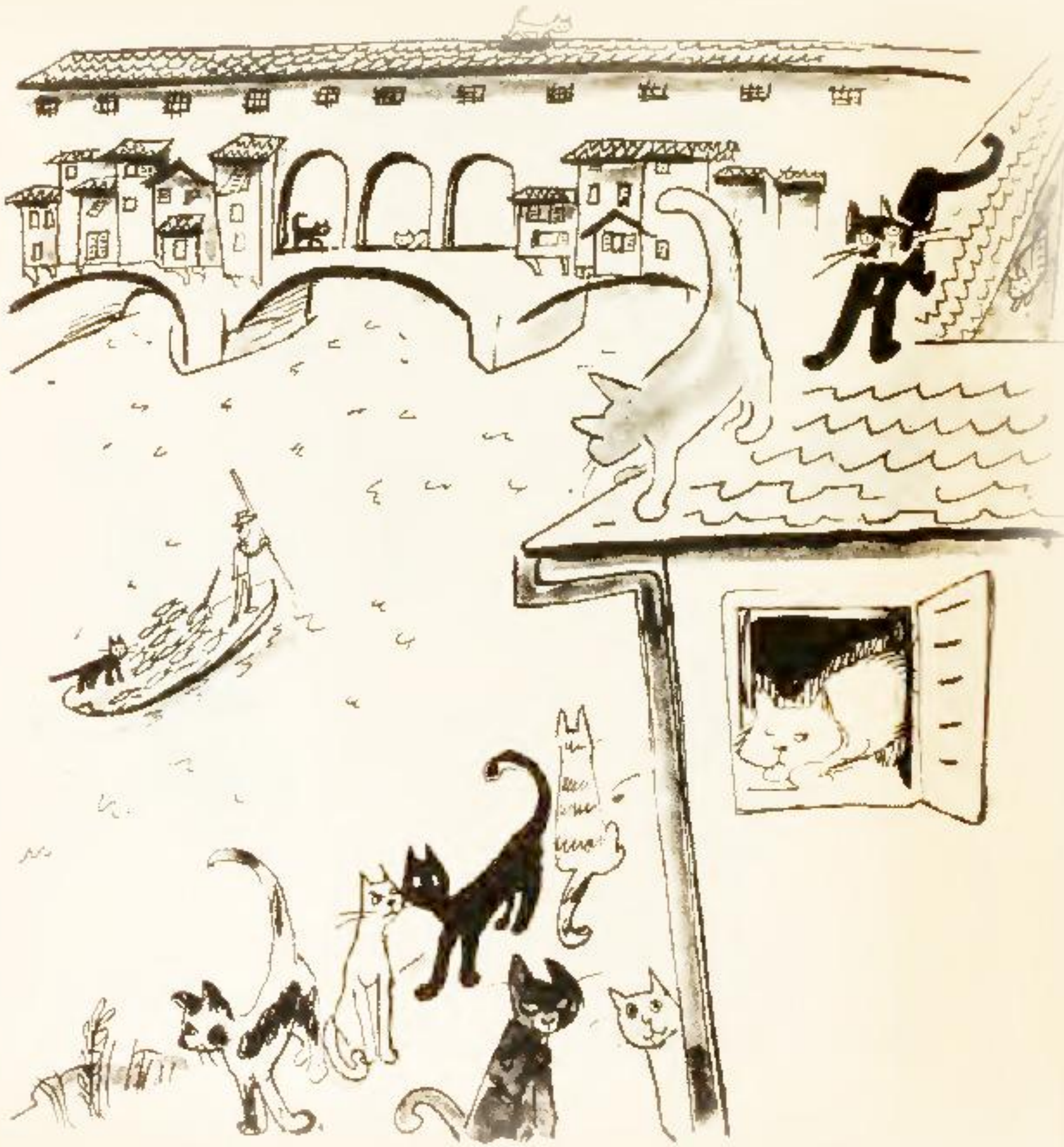
एक दिन जब फ्रांचेस्का अपनी खुफिया ख़्वाहिश पर सोचते गैलेरिया जा रही थी, कि वह एक बिल्ली से टकरा गई।

''मुझे माफ़ करना,'' उसने कहा और आगे बढ़ चली।



पर उस बिल्ली ने उसका पीछा किया और बार-बार उसके पैरों में उलझती रही। आख़िरकार फ्रांचेस्का झुकी, देखा कि बिल्ली के गले में एक चेन से लटका लॉकेट है।

अब फ्लॉरेंस में ढेरों-ढेर बिल्लियाँ हैं।
पर फ्रांचेस्का ने कभी ऐसी बिल्ली
नहीं देखी थी जो लॉकेट पहने हो।





उस लॉकेट पर एक महिला का छोटा-सा चित्र था।
''अरे सुन्दर बिल्ली,'' फ्रांचेस्का ने कहा, ''तुम्हें अपनी
मलकिन के पास जाना चाहिए - जाओ, जाओ।''
और उसने बिल्ली को धीमे से धक्का दिया।

हमेशा की तरह फ्रांचेस्का गैलेरिया में इतनी देर तक रही
कि नीनो को उसे घर ले जाने आना पड़ा।
जब वे दोनों घर के लिए निकले उन्होंने बिल्ली को
सीढ़ियों पर लेटे इन्तज़ार करते देखा ही नहीं . . .





उस रात, देर से
फ्रांचेस्का ने तंग गली
से रोने की उदास आवाज़
सुनी। वह खिड़की के पास
गई और पाया कि नीचे
अंधेरे में वही अनजान बिल्ली
म्याऊँ, म्याऊँ कर रही थी।
फ्रांचेस्का को उसे उठा कर अन्दर लाना ही पड़ा।



अगली सुबह टोकरी में एक नहीं, दो बिल्लियाँ थीं।

अब नीनो को फ्रांचेस्का को बुलाने गैलेरिया नहीं आना पड़ता था।
वह हर दिन उस अमरीकी महिला को देखने जाती ज़रूर
पर हमेशा समय से लौटना याद रखती,
ताकि लौट कर बिल्लियों से खेल सके।
जल्द ही छोटी बिलौटी की आँखें खुल गईं और
वह फ्रांचेस्का के गिर्द बर्फ-सी सफ़ेद गेंद
की तरह उछलने-कूदने लगी।





''ओह, काश! काश!
तुम मेरी होती, प्यारी, नन्ही बिलौटी!''





"No, no," said Mamma and Papa, shaking their heads.

''नहीं, नहीं,'' माँ और पापा ने सिर हिला मना किया।
''यह बिल्ली, लॉकेट में नज़र आ रही महिला की है,
सो उसकी बिलौटी भी उसकी ही हुई।
तुम्हें उस महिला को तलाशना चाहिए - यही सही होगा।''

फ्रांचेस्का जानती थी कि उसे सही काम करना चाहिए,
पर उसने खुद से कहाः “मैं कतई नहीं चाहती
कि मैं इनकी मालकिन को ढूंढूं!
पर फिर भी मैं कोशिश करूंगी . . .
सचमें करूंगी।”





सिस्टरों से पूछने पर उन्होंने कहा,
“नहीं हमने तो इस महिला को कभी नहीं देखा।”



शराब के छकड़े वाले ने कहा, “नहीं मैं तो इन्हें नहीं जानता।”



फूल बेचने वाली स्त्री ने कहा
“बड़े अफ़सोस की बात है।”



सिपाहियों ने भी ‘ना’ में सिर हिलाया।



“मुझे लॉकेट वाले चित्र को
ठीक से देखने दो,” मोची बोला।
यानी बाज़ार में हर कोई फ्रांचेस्का को तो जानता था
पर उस महिला को कोई नहीं पहचान सका।

सिनोर टुच्ची ने, जो चिड़िया बेचता था, कहा

“बेहतर होगा कि तुम किसी

अफ़सर से पूछो, फ्रांचेस्का।”



अफ़सर ने बिल्लियों के बारे में कुछ सुना ही नहीं था।

फ्रांचेस्का का दिल बल्लियों उछला।

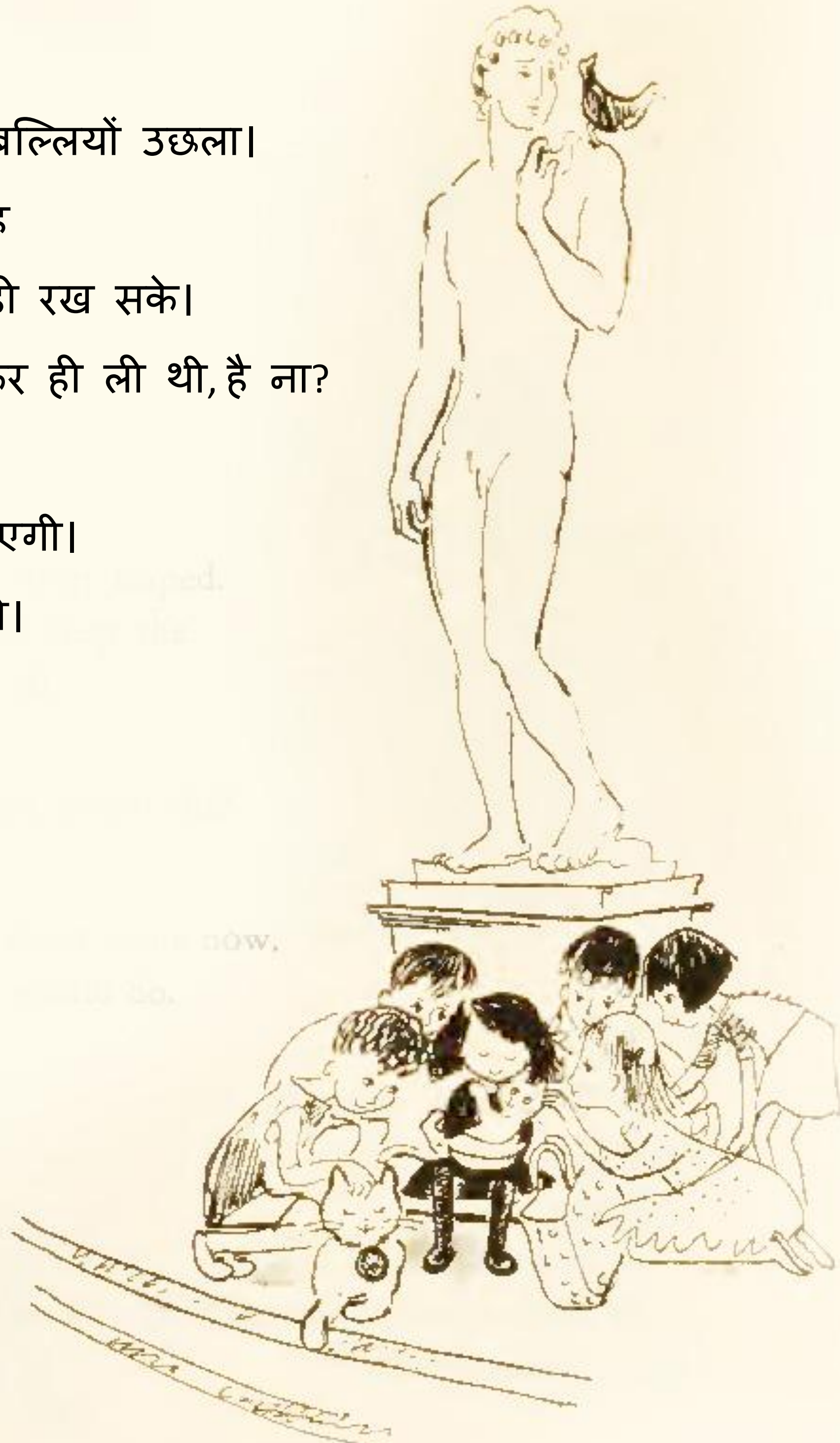
हो सकता है कि वह

बिल्लियों को खुद ही रख सके।

उसने कोशिश तो कर ही ली थी, है ना?

वह उन्हें घर ले जाएगी।

वह ठीक यही करेगी।





अगली सुबह फ्रांचेस्का ने बिलौटी को गले लगाया और बिल्ली का सिर थपथपाया। तब हाँफते-कांखते गैलेरिया को दौड़ी।

वह पूरे एक दिन जा ही नहीं पाई थी।

''अगर वह अमरीकी महिला अपने छोटे चित्रों को ले चली गई हो तो?''

पर नहीं, वह महिला वहीं थी।

फ्रांचेस्का दबे पाँव उनकी ओर बढ़ी।

अचानक गैलेरिया के प्रवेश द्वार से भारी हल्ला-गुल्ला सुनाई दिया।





वह महिला भी मुड़ी . . . फ्रांचेस्का ने चौंक कर साँस खींची . . .

इधर दरबान बिल्ली और बिलौटी को पकड़ने दौड़ रहे थे।

वे दोनों फ्रांचेस्का कर पीछा करते घुस आए थे।

और गैलेरिया में बिल्लियों का आना मना था।

बिल्ली कूदी और महिला की गोद में जा बैठी।

बिलौटी ने अपनी छोटी खुरदुरी जीभ से फ्रांचेस्का के टखने चाटे।



क्या शानदार मिलन था। पर फ्रांचेस्का उदास थी।
उसे नन्ही बिलौटी की कमी जो खलने वाली थी।
जब अमरीकी महिला की साँसे धीमी हुईं, उन्होंने दरबान से कहा,
''हम इन्हें फौरन बाहर ले जाएंगे।'' तब फ्रांचेस्का से कहा, '
'तुमने तो मुझे खुश कर दिया। क्या तुम इन्हें घर ले जाने
में मेरी मदद करोगी?''







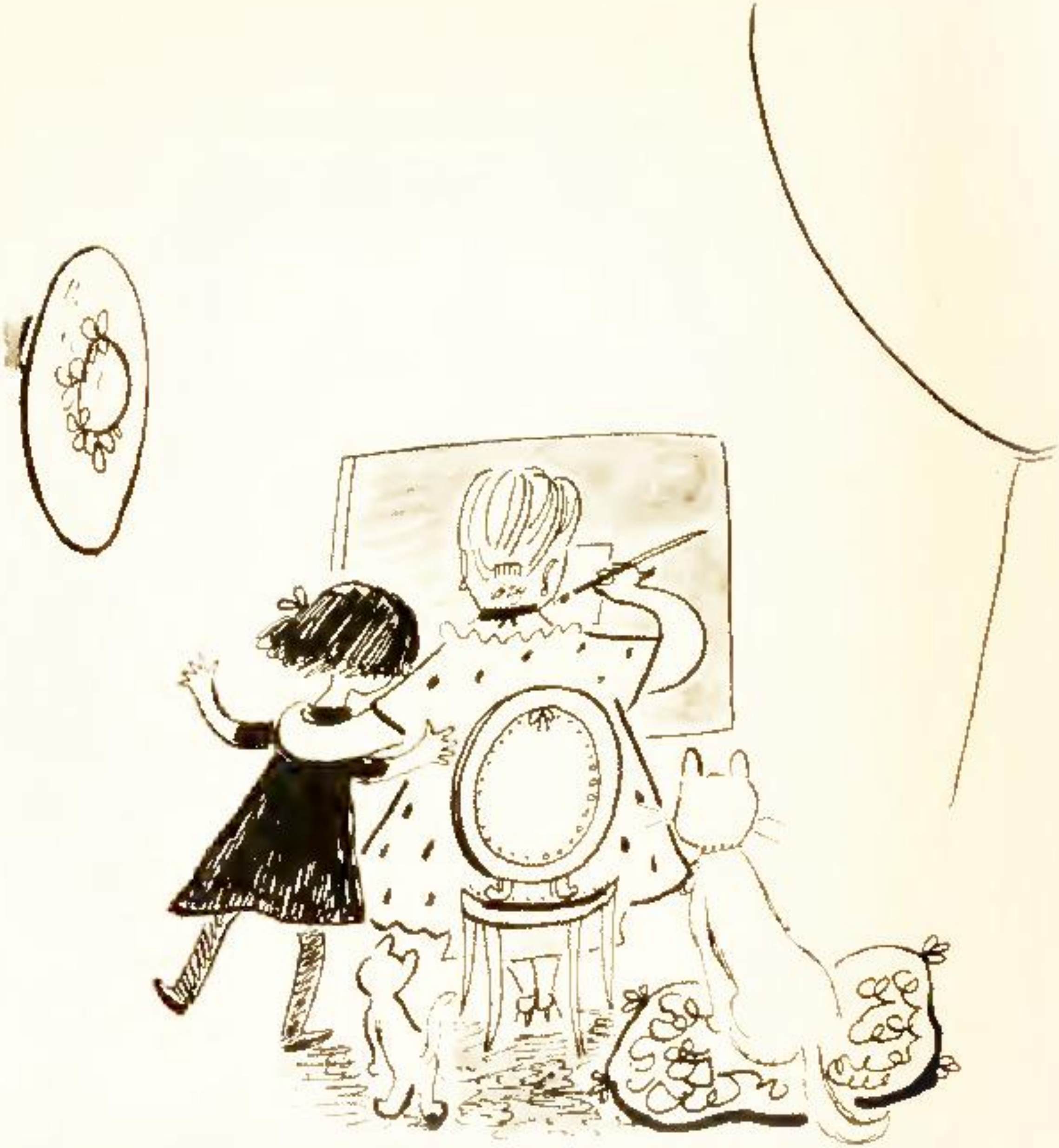
फ्रांचेस्का महिला के साथ बड़े होटल में गई।



वे लिफ्ट से ऊपर



महिला के कमरे में गए। तब सब कुछ इतनी तेज़ी से घटा कि फ्रांचेस्का को चिकोटी काट कर जाँचना पड़ा कि कहीं वह सपना तो नहीं देख रही।



महिला अपने चित्रफलक तक यह कहते गईं,
''एक छोटी बिलौटी तो एक छोटी लड़की की ही होनी चाहिए। और अगर वह कभी तुमसे खो जाए, . . .''



और इस तरह फ्रांचेस्का की दोनों ख़्वाहिशें सच हो गईं। यह किसी असली परी-कथा सा था।

अपना खुद का एक चित्र और अपनी खुद
की बिलौटी पा फ्रांचेस्का को लगा कि
वह एक परी-कथा की राजकुमारी है!





वह खुशी से उछलते लौटी।

तंग गली के अपने घर में।



तंग गली में फ्लॉरेंस के असली शहर में।

फ्रांचेस्का एक तंग गली के
एक तंग मकान में, इटली के प्राचीन
शहर फ्लॉरेंस में रहती है। एक दिन उसे
पता चलता है कि उसकी दो ख़्वाहिशें हैं -
पहली एक बिलौटी की, और दूसरी एक छोटे
चित्र की जिन्हें वह खुद अपना कह सके।
ये ख़्वाहिशें केसे पूरी होती हैं उसकी कहानी
फ्रांचेस्का को परी-कथा की राजकुमारी होने
का अहसास करवाती हैं।